This work is a digital copy of a play which was scripted and performed by Jana Natya Manch, Delhi. It is being made available on the internet via digital means to enable performance, translation, adaptation, or academic study.

Jana Natya Manch is placing this work in the public domain under the Creative Commons Attribution Non-Commercial Share Alike License 3.0.

## Usage guidelines

The rights to the work rest with Jana Natya Manch. You may use it under the following conditions:

+ You will make non-commercial use of the work.
+ Maintain attribution of the work to Jana Natya Manch.
+ Sharing the work with others will be contingent upon all of the above conditions being agreed to by every subsequent user.

For further information visit www.jananatyamanch.org

Note: This PDF was prepared by exporting an earlier version of the file which used proprietary fonts. Due to some incompatibility some of the fonts have not converted properly. We believe you will be able to read the play nevertheless.

# मई दिवस की कहानी

*;जन नाट्य मंचऋ अप्रैल १९८६ऋ ४५ मिनटऋ ८ कलाकार। यह नाटक मई दिवस वेळ शताब्दी वर्ष में लिखा गया था।द्ध*

## पात्र विभाजन

१. गायक/ सूत्रधार/ पात्र-१/ अख़बार/ जज/ स्मिल्गिन/ हिटलर/ रीगन
२. पात्र-२ / प्रदर्शनकारी
३. पात्र-३ / नात्सी-१ / पुलिस
४. पात्र-४ / बूढ़ा / स्पाइज़ / आंद्रेइ / बेंजामिन
५. पात्र-५ / पुलिस / पिंळशर / नात्सी-२
६. पात्र-६ / पुलिस / पावेल / पार्सन्ज़ / बाप
७. पात्र-७ / औरत मज़दूर / मां / अख़बारवाली / औरत
८. पात्र-८ / जे गोल्ड / पूंजीपति / एंजल / पड़ोसी

*मज़दूरों की वर्दियां पहने आठ पात्र दायरे में आते हैं।*

गाना : सारी दुनिया में जो दिन मज़दूरों का कहलाता जी,
आओ सुनाएं तुमको हम उस मई दिवस की गाथा जी।
सरमायेदारी निज़ाम जब से दुनिया में आया जी,
मज़दूरों का ख़ून चूस कर उसने नफ़ळा कमाया जी।

*छः पात्र 'हेईस्सा, हेईस्सा' की आवाज़ करते हुए काम करते हैं।*

सूत्रधार : बात है पिछली शताब्दी की। आज से सौ साल से भी ज़्यादा पुरानी बात।

सब : हेईस्सा, हेईस्सा।

पात्र-२ : एक अमरीकन इजारेदार था जिसका नाम था ''जे गोल्ड''

सब : जे गोल्ड। हेईस्सा, हेईस्सा...।

पात्र-३ : जे गोल्ड कई रेल कंपनियों का मालिक था। टेलीग्राफ़ळ कंपनियां और समुद्री जहाज़ कंपनियां उसकी पूंजी वेळ साम्राज्य का हिस्सा थीं।

पात्र-४ : उन मज़दूरों को जिनकी मेहनत वेळ बल पर वह मालदार बना था वह ढोर डंगरों से ज़्यादा वुळछ नहीं समझता था।

*पात्र-८ जे गोल्ड का मुखौटा लगाए उठता है। अपने संवाद वेळ दौरान बाव़ळी पात्रों से मार पिटाई करता है।*

जे गोल्ड : मैं अपने कर्मचारियों को अपनी सुविधा वेळ मुताबिव़ळ इस्तेमाल की जाने वाली चीज़ समझता हूं। जब वे बूढ़े और बेकार हो जाते हैं तो उन्हें रास्ते पर पेळंक देता हूं।
*;पात्र-४ को धक्का देता हैद्ध*

*जे गोल्ड जाता है। बाव़ळी पात्र पात्र-४ की लाश उठा कर बीच में लाते हैं। नीचे रखकर पलटते हैं।*

सब : दुनिया भर वेळ पूंजीपतियों का यही रवैया था।

*सब पात्र बाहर जाते हैं। पात्र-४ धीरे-धीरे उठता है।*

चार : मैं उन्नीसवीं सदी का एक आम ग़रीब, अमरीकन मज़दूर। सरमायेदारी का एक असहाय शिकार। मैं बीसवीं सदी वेळ हिंदुस्तानी मज़दूरों से पूछता हूं, क्या आज मेरे ज़माने से सौ सवा सौ साल बाद, आपवेळ मुल्क में, सरमायेदारों का रवैया वुळछ बदल गया है?

सूत्रधार : कौन कहता है बदल गया है? वो आज भी हमें जानवर समझते हैं?

सूत्रधार : हम क्या जानें तब से अब तक बीत गए सौ साल,
आज भी हम भूखे नंगे हैं, आज भी हम बेहाल
रोटी मांगें तो पाएं हम लाठी गोली आज
सरमायेदारों वेळ बस में पूरे देश की लाज
ओ मज़दूर और किसानो, ओ दुखियारे इंसानो
झूठी आशा छोड़ो तोड़ो बंधन तोड़ो बंधन।
तोड़ो बंधन तोड़ो ये अन्याय वेळ बंधन,
तोड़ो बंधन, तोड़ो बंधन...

पात्र-४ : हां, आज तुम लोग मिल वेळ, एक आवाज़ में ये तो कह सकते हो कि तोड़ो, बंधन तोड़ो। लेकिन मेरे दौर में मज़दूर इतने संगठित नहीं हुए थे, वो मजबूर थे कि दिन-रात, रात-दिन मालिक की ग़ुलामी करें और चूं भी न बोलें। आओ, मैं तुम्हें दिखाता हूं कि उन दिनों मज़दूरों की क्या हालत थी।

*महिला पात्र-७ बीच में आकर बैठ जाती है। गाने वेळ दौरान मेहनत वेळ मूवमेंट करती धीरे-धीरे उठती है।*

सूत्रधार : भरी जवानी में भी बूढ़ी लगने वाली,

कोरस : फटे-पुराने कपड़ों से तन ढकने वाली,
सूत्रधार : भूख की मारी ये दुखियारी,
कोरस : आंखें जिसकी लाल हो गईं,
थकन से जो बेहाल हो गई।
सूत्रधार : कपड़ा मिल वेळ कल पुरज़ों में
अटकी लटकी क्या करती है
कोरस : क्या करती है? क्या करती है? क्या करती है?

*[छः पात्र कपड़ा मिल की रचना बनाते हैं। मिल में थान चलता है। पात्र-७ मशीन पर काम करती है।]*

औरत : ताना बाना सूत कताई,
फंसकर इनमें उमर बिताई,
पौ फटने से पहले बैठूं,
देर रात तक करूं कताई,
कोरस : ताना बाना सूत कताई
फंसकर इनमें उमर बिताई
औरत : बच्चों को रोटी मिल पाए
जाड़े में बस तन ढक जाए,
इतनी तो हो जाए कमाई
कोरस : ताना बाना सूत कताई
फंसकर इनमें उमर बिताई
औरत : बोझ से भेजा फटने आए
हाथों से सुई गिर जाए
पल-पल नींद का झोंका आए
सपनों में भी चले सलाई
कोरस : ताना बाना सूत कताई
फंसकर इनमें उमर बिताई
पात्र-८ : *;पूंजीपति का मुखौटा लगाए, आदेश देते हुए मशीन की गति तेज़ करता है।ध्र*
मेरी मिल में ख़ूब कमाई
ताना बाना सूत कताई
मेरी मिल में ख़ूब कमाई
ताना बाना सूत कताई।

*[अचानक पात्र-७ मशीन पर काम करना बंद कर देती है।]*

औरत : करोड़ों मज़दूरों का यही हाल था। मालिक १८-१८, २०-२० घंटे काम करवाते, बच्चों और औरतों को भी सुबह से रात गए तक मेहनत करनी पड़ती।

*[सब कलाकार निढाल मज़दूरों की मुद्रा में खड़े हैं। सबवेळ हाथ पीठ वेळ पीछे बंधे हैं।]*

पात्र-२ : कोयला खान में काम करने वाले
पात्र-३ : रेल चलाने वाले
पात्र-४ : भट्टों में कोयला झोंकने वाले
सब : सब पूंजी की ज़ंजीरों में जकड़े हुए थे।
पात्र-७ : लेकिन फिर आया २० अगस्त, सन् १८६६

*[सब तेज़ी से घूमते हैं। उनवेळ खुले हुए हाथ सिर वेळ ऊपर लहराते हैं।]*

कोरस : २० अगस्त, सन् १८६६
सूत्रधार : यानी आज से सवा सौ साल पहले, अमरीका वेळ शहर बैल्टिमोर में मज़दूरों ने नेशनल लेबर यूनियन बनाई और यह घोषणा की...
कोरस : इस देश वेळ मज़दूरों को पूंजीवादी ग़ुलामी से आज़ाद कराने वेळ लिए सबसे पहले, आठ घंटे काम वेळ व़ळानून को, पास कराना ज़रूरी है।

*[आठों हाथ पैळलाकर शपथ लेते हैं]*

कोरस : हम शपथ लेते हैं, कि जब तक, यह अधिकार नहीं पा लेते, तब तक, अपनी पूरी ताव़ळत वेळ साथ, संघर्ष करते रहेंगे।

*[पात्र-६ नारा लगाता है।]*

पात्र-६ : आठ घंटे से ज़्यादा काम
कोरस : नहीं करेंगे, नहीं करेंगे।
पात्र-५ : इसवेळ बाद आठ घंटे काम की मांग ने ज़ोर पकड़ा। अमरीका वेळ हर शहर में मज़दूरों वेळ लश्कर सड़कों पर निकलने लगे।
पात्र-७ : नारे लगाते, संघर्ष वेळ तराने गाते

*[सब लाल झंडे उठाते हैं। सूत्रधार वेळ साथ गाने में शामिल होते हैं।]*

सूत्रधार : सूखे टुकड़ों की ख़ातिर हम
बंधुआ हरगिज़ नहीं बनेंगे
अपने जीवन का हर पल
मालिक वेळ हवाले नहीं करेंगे।
खुली हवा में घूमेंगे हम
हम भी बहारें देखेंगे
आठ ही घंटे काम करेंगे
जीवन गिरवी नहीं रखेंगे।
भट्टों, पैळक्ट्रियों, गोदामों
से है सबने ललकारा
काम करेंगे आठ ही घंटे
मज़दूरों का यह नारा।
पात्र-३ : यह मांग मनवाने वेळ लिए अमरीका वेळ मज़दूरों ने पहली मई, सन् १८८६ को पूरे देश में हड़ताल करने का पैळसला किया।
कोरस : आज से कोई सौ साल पहले।
पात्र-४ : पहली मई सन् १८८६।
कोरस : पहली मई सन् १८८६।

*[मज़दूर सो रहे हैं। तीन बार हूटर बजता है। बूढ़ा आता है।]*

बूढ़ा : अरे लौंडो क्या बात है, आज काम पर नहीं जाओगे क्या? चलो उठो, हरामख़ोरो। नौकरी खोने का इरादा है क्या?

पात्र-१ : चार्ली चाचा, आज पहली मई है, भूल गए क्या?

बूढ़ा : पहली मई है तो क्या हुआ, तुम लोग काम पर क्यूं नहीं जा रहे? सवेरे से तीन-तीन बार हूटर बज चुका है, देर से जाओगे तो दिहाड़ी कटेगी कंबख़्तो।

पात्र-२ : आज पूरे शिकागो शहर में कोई मज़दूर काम पर नहीं जाएगा□हड़ताल है हड़ताल।

पात्र-३ : सारा काम ठप्प रहेगा आज, हमने शिकागो का चक्का जाम कर दिया है।

बूढ़ा : इत्ते दिन से हड़ताल की बात सुन तो मैं भी रहा हूं, पर यव़ळीन नहीं आता□क्या वाव़ळई पूरी हड़ताल हो जाएगी।

पात्र-३ : देखते रहो चाचा, आज एक भी चिमनी से धुआं नहीं निकलेगा।

*□औरत अख़बार लिए आती है।□*

अख़बारवाली: आज की ताज़ा ख़बर, आज की ताज़ा ख़बर, शिकागो मेल, शिकागो मेल।

पात्र-१ : लो आ गया दोपहर का अख़बार, देखें, बाव़ळी शहरों का क्या हाल है।

पात्र-२ : ओ एलिस, ज़रा अख़बार इधर तो ला।

अख़बारवाली: क्यूं, आज तुम्हें अख़बार की क्या ज़रूरत पड़ गई?

पात्र-२ : अरे आज तो हम ही ख़बर बना रहे हैं। ला दिखा।

सब : पढ़ तो सही, क्या लिखा है? ज़रा देखें, क्या हाल है अमरीका का।

पात्र-२ : अरे वाह।

सब : क्या लिखा है? बता तो सही। ज़ोर से पढ़।

पात्र-२ : *;पढ़ता है।ध्र* तीन लाख चालीस हज़ार मज़दूरों ने जुलूस निकाले।

सब : *;ख़ुश होकरध्र* होए।

पात्र-२ : दो लाख पूरी हड़ताल पर।

सब : होए।

पात्र-२ : शिकागो में ८०,००० ने हड़ताल की।

सब : होए।

पात्र-२ : अख़बार का मालिक बहुत जला भुना लगता है।

बूढ़ा : क्या लिखता है?

पात्र-२ : लिखता है 'शिकागो में दो शैतान बेलगाम घूम रहे हैं। शरीफ़ळ नज़र आने वाले ये दोनों बदमाश पहली मई को गड़बड़ी पैळलाने की कोशिश करेंगे।'

बूढ़ा : किसवेळ बारे में लिखा है?

पात्र-३ : अरे और किसवेळ बारे में लिखेगा? कामरेड पार्सन्ज़ और कॉमरेड स्पाइज़ वेळ बारे में लिखा है।

पात्र-१ : हरामज़ादा, इसकी ये मजाल कि मज़दूर नेताओं को इस तरह बदनाम करे। *;अख़बार फाड़कर पेळंकता है।ध्र* मज़दूर एकता ज़िंदाबाद।

*□मज़दूर नारे लगाते हैं।□*

औरत : मेरा अख़बार। *;फटे अख़बार को उठाती है। फिर फाड़कर पेळंकती है।ध्र* मज़दूर एकता ज़िंदाबाद।

*□बाहर जाती है। पात्र-८ पूंजीपति का मुखौटा लगाए आता है। पात्र-५ उसवेळ पीछे बंदूव़ळ संभाले है।□*

पूंजीपति : मे डे की स्ट्राईक से वरकर्ज़ की हिम्मत बहुत बढ़ गई है। उन्हें लाइन पे लाना होगा।

पुलिसवाला : सर! ३ मई मैकमिर्की हार्वेस्टर वर्क्स में मज़दूरों की एक और मीटिंग है।

पूंजीपति : तुम अपने सिपाहियों को लेकर वहां पहुंचो, मैं पिंकर्टन एजेंसी से गार्डों को बुलवाता हूं। उन्हें ऐसा सबव़ळ सिखाएंगे कि फिर कभी सर न उठा सवेळं।

*□दोनों फ़्रीज़ करते हैं, उधर से बाव़ळी पात्र गाते हुए आते हैं।□*

कोरस : हम भूख से मरने वाले
क्या मौत से डरने वाले

पूंजीपति : फ़ळायर!

*□पुलिस गोली चलाता है। मज़दूर गिरते हैं। पुलिस व पूंजीपति जाते हैं। धीरे-धीरे बाव़ळी पात्र उठते हैं।□*

कोरस : पुलिस और किराए वेळ गुंडों की गोलियों से ६ मज़दूर मारे गए और सैकड़ों घायल हुए।

पात्र-३ : यह थे मई दिवस आंदोलन वेळ पहले शहीद।

पात्र-२ : मई दिवस वेळ शहीदों को लाल सलाम।

कोरस : लाल सलाम, लाल सलाम।

*□नारे लगाते हुए इधर-उधर घूमते हैं। इस दौरान बाव़ळी पात्र भी उनमें शामिल हो जाते हैं। अचानक थमते हैं।□*

पात्र-३ : अगले दिन चार मई को शिकागो वेळ मज़दूरों ने हे मावेर्ळट स्क्वेयर में विरोध सभा की।

*□फिर नारों वेळ साथ इधर-उधर घूमते हैं। सभा की रचना बनाते हैं। एक ओर वक्ता, दूसरी ओर श्रोता।□*

पात्र-४ : रात दस बजे तक शिकागो वेळ हे मावेर्ळट चौक की वो ऐतिहासिक सभा शांतिपूर्ण ढंग से चलती रही।

पात्र-५ : तभी, अचानक, भीड़ वेळ बीचों बीच, एक धमाका हुआ।

*□धमाका होता है। भगदड़ मचती है।□*

पात्र-६ : पुलिस और पिंकर्टन एजेंसी वेळ गुंडों को इसी का इंतज़ार था।

पात्र-७ : लाठी और बंदूवळों से लैस हैवानों की फ़ौज मज़दूरों पर टूट पड़ी।

*चीख़ पुकार होती है।*

कोरस : अनगिनत मज़दूर घायल हुए।
और चार पुलिस की गोलियों का शिकार।

*एक लाश बीच में पड़ी है। बाक़ी सब लाश वेळ पास इकट्ठा होते हैं।*

पात्र-६ : सुना तुमने, इस भगदड़ में एक पुलिसवाला भी मारा गया है।

कोरस : वैळसे?

पात्र-५ : अरे वैळसे क्या। मैं बताता हूं। मालिकों वेळ गुंडों ने मारा है पुलिसवाले को। यह हमारे आंदोलन को तोड़ने की साज़िश है, हमारे नेताओं को गिरफ़्तार करने की चाल है। इसीलिए सरमायेदारों वेळ अख़बारों ने आसमान सर पे उठा लिया है। जानते हो, शिकागो ट्रिब्यून अख़बार ने क्या लिखा है?

कोरस : क्या?

*अख़बार का मुखौटा लगाये पात्र-१ खड़ा होता है।*

अख़बार : इंसाफ़ळ की मांग है कि मज़दूर नेताओं को गिरफ़्तार किया जाए और उन पर हत्या वेळ आरोप में मुक़ळदमा चलाकर फांसी की सज़ा दी जाए।

*अगले संवाद वेळ दौरान पात्र-४, ५, ६ और ८ एक लाइन में खड़े होते हैं। पात्र-२ और ३ कटघरे की रचना बनाते हैं।*

पात्र-७ : कामरेड पार्संज़ और स्पाईज़ वेळ अलावा भी कई मज़दूर नेता गिरफ़्तार किए गए। माइकिल स्क्वायर और जॉर्ज एंजल, एडॉल्फ़ळ फ़िळशर, लुई लिंग और मॉस्कर। मज़दूर आंदोलन वेळ इन बहादुर यो(ाओं पर मुक़ळदमा चलाया गया।

*पात्र-१ जज का मुखौटा लगाए और एक लंबी छड़ी लिए जिस पर एक ओर फांसी का फंदा बंधा है आता है।*

जज : पार्संज़, स्पाईज़, एंजल और फ़िळशर, तुम्हें अपने जुर्म वेळ बारे में क्या कहना है?

*एक-एक करवेळ चारों अपनी बात कहते हैं।*

स्पाइज़ : मैं हामी हूं ग़रीबों का, ग़ुलामी सह नहीं सकता
कि इस झूठी अदालत में कभी चुप रह नहीं सकता। मैं डंवेळ की चोट कहता हूं और हज़ार बार कहूंगा कि मैंने १६-१६, १८-१८ घंटे की ग़ुलामी की मुख़ालफ़ळत की है और आठ घंटे काम की मांग की है। मज़दूरों का ख़ून चूसने वालों की इस अदालत की नज़र में मैं एक ख़तरनाक अपराधी हूं, और मैं जानता हूं कि जज साहिब मुझे फांसी की सज़ा सुनाएंगे। सुनाओ सज़ाए-मौत, लेकिन मैं फिर भी कहूंगा ''आठ घंटे से ज़्यादा काम, नहीं करेंगे, नहीं करेंगे।''

एंजल : मेरी उम्र वुळल अट्ठारह साल है, लेकिन अदालत मुझे एक भयानक मुजरिम बताती है। क्या है मेरा जुर्म? यही न कि एक दो कौड़ी का मज़दूर होते हुए भी मैंने खुद को इंसान समझने की जुर्रत की? २४ घंटों में से वुळछ घंटे अपनी बूढ़ी और अपाहिज मां की देखभाल करने वेळ लिए मैंने मांगे? लेकिन नहीं, मेरी इस मांग से मालिकों वेळ मुनाफ़ेळ में कमी आने का ख़तरा पैदा हो गया। इसीलिए ये मुक़ळदमे का नाटक किया जा रहा है ताकि मेरे जैसे अपराधियों को ख़त्म कर दिया जाए। लेकिन मैं अदालत को चुनौती देता हूं कि चढ़ा दे मुझे फांसी पर, कर दे मेरे बदन वेळ टुकड़े-टुकड़े। मेरे ख़ून की हर बूंद से मेरे ही जैसे सैकड़ों मज़दूर पैदा होंगे जो ललकार कर कहेंगे कि हम इंसान हैं और अपने अधिकार ले वेळ रहेंगे।

फ़िळशर : मैंने बेकरी में काम करने वाले मज़दूरों को संगठित किया, उन्हें समझाया कि उनसे १४-१४ घंटे काम करवाना अपने आप में एक घिनौना अपराध है। मैंने होटलों, दुकानों, भट्टों में काम करने वालों की भी यूनियनें बनाईं। हां, मैंने ये सब वुळछ किया, और मौक़ळा मिलेगा तो फिर करूंगा। अगर ये अपराध है तो चढ़ा दो मुझे फांसी पर, मैं मज़दूर हूं, मौत से डरना मैंने नहीं सीखा है।

पार्संज़ : अगर तुम समझते हो कि हमें फांसी पर लटकाकर मज़दूर आंदोलन को ख़त्म कर दोगे तो देर मत करो, अभी चढ़ा दो हमें फांसी पर। तुम जिस चिंगारी को अपने पैरों तले रौंदने की कोशिश कर रहे हो वही चिंगारी एक धधकती आग बनकर तुम्हें राख कर देगी, आज नहीं तो कल। बुलाओ, बुलाओ अपने जल्लादों को, हम उनवेळ लिए तैयार हैं।

जज : जॉन पार्संज़, ऑगस्ट स्पाइज़, एडॉल्फ फ़िळशर और जॉर्ज एंजल, तुम्हें सज़ा-ए-मौत दी जाती है। तुम्हें तब तक फांसी पे लटकाया जाएगा जब तक तुम मर न जाओ।

*फंदा नीचे होते-होते चारों वेळ ऐन सिर वेळ ऊपर आ जाता है।*

चारों : मज़दूर एकता ज़िंदाबाद।

*जज धीरे-धीरे फंदे को ऊपर उठाता है। चारों फंदे से लटकने का अभिनय करते हैं। अचानक फंदा नीचे होता है, चारों ज़मीन पर ढह जाते हैं। पात्र-७ वूळदकर डंडा छीनकर बोलती है।*

पात्र-७ : मई दिवस वेळ शहीदों को लाल सलाम, लाल सलाम! लेकिन इन शहीदों की वुळर्बानी बेकार नहीं गई।

*चारों शहीद एक-एककर खड़े होकर दायरे में चार ओर जाते हैं।*

कोरस : तीन साल बाद।
पात्र-५ : १८८६ में।
पात्र-६ : अमरीका ही नहीं बल्कि दुनियाभर वेळ मज़दूरों ने
पात्र-८ : पहली मई को मज़दूर दिवस वेळ रूप में मनाने का पै़सला किया।
पात्र-७ : अगले साल, यानी १८९० में अनेक देशों में, मई दिवस को अंतर्राष्ट्रीय मज़दूर दिवस वेळ रूप में मनाया गया।
पात्र-४ : इंग्लैंड
पात्र-५ : फ्रांस
पात्र-६ : जर्मनी
पात्र-८ : आस्ट्रिया
पात्र-७ : और रूस।
पात्र-८ : रूस में तो मई दिवस मज़दूर वर्ग वेळ क्रांतिकारी आंदोलन का अंग बन गया।
पात्र-६ : रूस वेळ मज़दूरों ने मई दिवस को अपने आंदोलन को आगे बढ़ाने का हथियार बना लिया।

*पात्र-४, ५, ६ और ८ बाहर जाते हैं।*

पात्र-७ : आइए, आपको रूस ले चलते हैं आज से ८३ साल पहले। आज पहली मई है, सन् १९०५।

*इस संवाद वेळ दौरान सर पर स्कार्फ़ळ बांधती है।*

आंद्रेई : पावेल, पावेल, पावेल! *;अंदर आता है।द्ध*
पावेल : *;झंडा लिएद्ध* हां, मैं तैयार हूं।

*पीछे से पावेल की मां आती है।*

आंद्रेई : अरे पावेल, तुम्हारी मां कहां जा रही है?
मां : तुम्हारे साथ।
पावेल : हमारे साथ? अरे मां, जुलूस पूरे शहर में घूमेगा, मीलों पैदल चलना होगा, हज़ारों का भीड़-भड़क्का होगा।
मां : एक रूसी मज़दूर औरत का बेटा उससे पूछ रहा है कि क्या वो मई दिवस वेळ जुलूस में शामिल हो सवेळगी। मैं एक मज़दूर की बेवा हूं, मज़दूर की मां हूं। चालीस साल से आधे पेट चलती आई हूं। मुझे मुसीबतें झेलने की आदत है। वुळछ मील पैदल चलने से मुझे कोई तव़ळलीफ नहीं होगी। और मज़दूरों का भीड़ भड़क्का मुझे अच्छा लगता है बेटा।
आंद्रेई : ठीक है मां, चलो। अच्छा रहेगा।

*चलते हैं। स्मिल्गिन और तीन मज़दूर आते हैं।*

स्मिल्गिन : *;दूर सेद्ध* लाल सलाम कामरेड।
पावेल : लाल सलाम स्मिल्गिन चाचा।
मां : सलाम स्मिल्गिन। भगवान तुम्हें बनाए रखे।
स्मिल्गिन : हज़ारों मज़दूर जुलूस में शामिल हो गए हैं। सुनो, उनवेळ गाने की आवाज़ आ रही है
स्मिल्गिन : *;गाता हैद्ध* उठो जागो भूखे बंदी...
तीनों : अब खींचो लाल तलवार
कब तक सहोगे भाई
ज़ालिम वेळ अत्याचार

*सामने से बंदूव़ळ लिए पुलिस वाला आता है।*

आंद्रेई : पावेल, सामने देखो।
पावेल : पुलिस!
स्मिल्गिन : उनकी बंदूव़ेळं तो देखो।
आंद्रेई : उनवेळ इरादे नेक नहीं लगते।
मां : कम से कम एक हज़ार तो होंगे।
पावेल : घबराओ नहीं, बढ़ते रहो
कोरस : *;गाते हैंद्ध* हम भूख से मरने वाले
क्या मौत से डरने वाले
पुलिस : ठहर जाओ। आगे जाने की मनाही है। आगे बढ़े तो गोली चलाई जाएगी। अपना झंडा पेळंक दो।
पावेल : झंडा नीचे नहीं किया जाएगा।
पुलिस : फ़ळायर। गोली चलाओ।

*मां आगे जाती है। पुलिस से विनती करती है।*

मां : अरे बेटा, यह क्या करता है। तू भी तो किसान का बेटा है। देख, ये लोग सिर्फ़ळ जुलूस ही तो निकाल रहे हैं। दिन रात मेहनत मजूरी करवेळ रोटी कमाने वाले लोग हैं यह। गोली मत चला बेटा।
पुलिस : बुढ़िया हट जा सामने से, नहीं तो तू भी मारी जाएगी।

*मां को धक्का देता है। वह दूर जा गिरती है। पावेल आंद्रेई को झंडा पकड़ाकर अपनी मां की तरफ़ळ लपकता है। उसे उठाता है।*

पावेल : झंडा न गिरने पाए कामरेड। झंडा ऊंचा रखो ताकि सब देख सवेळं कि मज़दूरों का झंडा, मज़दूरों वेळ हव़ळ में लहरा रहा है।

*पावेल और मां फिर जुलूस में शामिल होते हैं। जुलूस आगे बढ़ता है। पुलिस पीछे हटती है। आंद्रेई रुकता है।*

आंद्रेई : यह झंडा उस दिन तक लहराएगा जब तक यह समाज बदल नहीं जाता। यह मज़दूरों का झंडा है, हाकिमों और ज़ालिमों वेळ लिए ख़तरे की घंटी है हमारा झंडा, यह झुक नहीं सकता।

*पावेल आगे आकर नारा लगाता है। बाव़ळी प्रदर्शनकारी दोहराते हैं।*

पावेल : लहर लहर लहराएगा
प्रदर्शनकारी : नया ज़माना आएगा
पावेल : दुनिया भर वेळ मज़दूरों की
प्रदर्शनकारी : जीत तलक लहराएगा।

*स्मिल्गिन आगे बढ़कर आंद्रेई से झंडा ले लेता है।*

स्मिल्गिन : झंडा मुझे दो। मेरा नाम है स्मिल्गिन। पचास साल का

बूढ़ा मज़दूर हूं। बीस साल से आंदोलन में हूं। हमेशा की तरह आज भी मैं देख रहा हूं कि ज़ालिम मेरी राह में खड़े हैं। क्या उनवेळ डर से मैं अपना झंडा छोड़ दूंगा।

आंद्रेई : नहीं स्मिल्गिन चाचा।

पावेल : झंडा मत छोड़ना।

मां : उठाए रहो स्मिल्गिन। झंडा उठाना कोई पाप नहीं है।

पुलिस : मैं कहता हूं, झंडा फेंक दो, नहीं तो गोली मार दूंगा।

*[स्मिल्गिन ठिठकता है। गर्दन घुमाकर पीछे देखता है। बाव़ळी पैळलकर खड़े होते हैं।]*

आंद्रेई : स्मिल्गिन ने मुड़कर देखा

कोरस : देखा जुलूस मज़दूरों का
परचम लाल उठाए
वो आगे बढ़ते आए
मज़दूरों वेळ ख़ून से भीगा
परचम लाल उठाए।

*[स्मिल्गिन फिर सामने देखता है। एक व़ळदम आगे बढ़ाता है।]*

स्मिल्गिन : नहीं यह झंडा मैं नहीं छोडूंगा।

आंद्रेई : शाबाश कामरेड।

मां : शाबाश स्मिल्गिन

स्मिल्गिन : इंव़ळलाब...*;गोली चलती है।ध्व*

पावेल : कामरेड!

आंद्रेई : कामरेड!

*[मां दौड़कर आगे जाती है। झंडा संभालती है। स्मिल्गिन धीरे-धीरे ढहता है।]*

मां : स्मिल्गिन, यह झंडा अब मैं उठाऊंगी। एक मज़दूर की बेवा, एक मज़दूर की मां, अब मैं इसे लेकर चलूंगी। इस ज़ालिम समाज को बदलना होगा।

*[दोनों उसी मुद्रा में थम जाते हैं। पीछे से प्रदर्शनकारी बोलते हुए दायरे में अलग-अलग दिशा में जाते हैं। पुलिस वाले भी जाते हैं।]*

आंद्रेई : भूख, ग़रीबी और बदहाली वेळ मारे

पावेल : रूसी मज़दूर, फ़ळौजी, किसान, बच्चे, औरतें और नौजवान

पात्र-५ : मई दिवस वेळ लाल झंडे को उठाए

पात्र-८ : ज़ालिम समाज को बदलने वेळ लिए निकल पड़े।

*[सब पात्र, लाल झंडे उठाए इधर-उधर घूमते और गाते हैं]*

गाना : चौक-चौक पर, गली-गली में लाल फरेरे लहराते
मज़लूमों वेळ बाग़ी लश्कर चार तरफ़ळ उमड़े आते।
भई चार तरफ़ळ उमड़े आते
भई चार तरफ़ळ उमड़े आते
ज़ाती जागीरों वेळ हव़ळ, दौलत वेळ दावे ख़त्म हुए
शाही दरबारों वेळ दर से फ़ळौजी पहरे ख़त्म हुए
भई फ़ळौजी पहरे ख़त्म हुए
भई फ़ळौजी पहरे ख़त्म हुए
एक नया सूरज निकला है, एक नई रुत आई।
राज गया अब सरमाये का, जनता की बारी आई।
जनता की बारी आई
जनता की बारी आई।

*[आख़िरी पंक्ति दोहराते सभी पात्र अभिनय-स्थल वेळ बीच इकट्ठा होते हैं, अपने झंडे ऊपर उठाए।]*

पात्र-१ : २६ अक्टूबर, १९१७

कोरस : २६ अक्टूबर, १९१७

*[हर पात्र अपना संवाद बोलता हुआ अलग-अलग दिशा में जाता है।]*

पात्र-२ : पूंजीवादी व्यवस्था की जड़ें तक हिल गईं

पात्र-३ : दुनिया वेळ इतिहास में पहली बार

पात्र-४ : मेहनतकशों ने राज की बागडोर अपने हाथों में थामी

पात्र-५ : रूस में इंव़ळलाब आया और पहला मज़दूर राज व़ळायम हुआ

पात्र-१ : दुनिया ने एक नए दौर में व़ळदम रखा।

कोरस : समाजवाद का दौर।

पात्र-७ : लेकिन उधर जर्मनी में समाजवाद की दुश्मन और इंसानी ख़ून की प्यासी

कोरस : एक ख़तरनाक ताव़ळत उभर रही थी।

*[एक अभिनेता भागता हुआ आता है, गिरता है, फिर भागता हुआ बाहर जाता है। दो नात्सी सैनिक उसका पीछा करते हुए बाहर जाते हैं।]*

पात्र-१ : १९३३ में हिटलर सत्ता में आया और पूरे जर्मनी में आतंक और ख़ून-ख़राबे की आंधी आ गई। लाखों लोगों को मौत वेळ घाट उतार दिया गया।

*[पात्र-४, ६ और ७ अभिनय स्थल में आकर सो जाते हैं, दो नात्सी सैनिक दरवाज़ा खटखटाते हैं।]*

नात्सी-१ : दरवाज़ा खोलो।

नात्सी-२ : खोलो दरवाज़ा।

बेंजामिन : इतनी रात गए कौन आया है?

नात्सी-१ : अबे सुनाई नहीं देता क्या? दरवाज़ा खोलो।

नात्सी-२ : दरवाज़ा खोलो हरामज़ादो, मर गए हो क्या?

औरत : हे भगवान, ये क्या आफ़ळत आई है?

नात्सी-१ : खोलो दरवाज़ा

नात्सी-२ : दरवाज़ा खोलो नहीं तो तोड़ डालेंगे हरामियो।

*[बेंजामिन दरवाज़ा खोलता है। दोनों नात्सी व़ळदकर अंदर आते हैं और उसका गिरेबान पकड़ते हैं।]*

नात्सी-१ : तेरा ही नाम बेंजामिन है?

बेंजामिन : हां सरकार।

नात्सी-१ : पकड़ लो साले को।

बेंजामिन : पर सरकार, मेरा वुळसूर क्या है?

नात्सी-२ : वुळसूर पूछता है हरामज़ादे।

नात्सी-१ : सरेआम सरकार वेळ ख़िलाफ़ळ प्रचार करता है। जर्मनी वेळ प्यारे नेता हिटलर को बुरा-भला कहता है। *;मारता है।द्ध* फिर पूछता है वुळसूर क्या है! ले चलो हरामी को।

औरत : छोड़ दो, छोड़ दो उसे, उसने वुळछ नहीं किया।

नात्सी-२ : पीछे हट हरामज़ादी। *;औरत को धवेळलकर बाहर जाते हैंद्ध*

औरत : छोड़ दो, छोड़ दो मेरे आदमी को, वो बेकसूर है उसने वुळछ नहीं किया।

बाप : बहू, चीख़ने चिल्लाने से वुळछ नहीं होगा। एक बार जो उनवेळ चंगुल में फंस गया वो ज़िंदा नहीं लौटता।

औरत : उसने वुळछ नहीं किया। वो तो हमेशा ख़ामोश रहा करता था।

*[पड़ोसी आता है।]*

पड़ोसी : बेंजामिन को भी ले गए? क्या किया था उसने?

बाप : आजकल पकड़े जाने वेळ लिए कोई अपराध करना ज़रूरी नहीं होता बेटे।

पड़ोसी : फिर भी, कोई वजह तो होगी।

औरत : सुबह राशन की दुकान पर गए थे। लौटवेळ मुझे बता रहे थे कि वहां खड़े लोगों से इतना भर कहा था कि व़ळीमतें इसी तरह बढ़ती रहीं तो हम कम मजूरी पाने वाले तो भूखों ही मर जाएंगे।

बाप : मैंने तभी कहा था कि इस तरह वक़्त बेवक़्त बोलना ख़तरे से ख़ाली नहीं।

औरत : अपनी ग़रीबी का रोना भी न रो सवेळ इंसान, तो ऐसे जीने से मर जाना अच्छा।

पड़ोसी : लेकिन उन तक इसकी ख़बर पहुंची वैळसे?

बाप : चारों तरफ़ळ उनवेळ जासूस पैळले हुए हैं। मुंह से वुळछ निकला नहीं कि बस, पुलिस घर पे पहुंच जाती है। श्श्श्श।

*[नात्सी सैनिक एक बंद संदूव़ळ लाते हैं।]*

नात्सी-१ : सुन बे बुड्ढ़े, अपनी बहू को समझा दे कि चीख़-पुकार न मचाए। कोई पूछे तो यही कहे कि अचानक बीमार पड़वेळ मर गया। उल्टा-सीधा वुळछ बका तो ख़ैर नहीं होगी।

*[जाते हैं।]*

बाप : मेरा बेटा, मेरा बेटा, मेरा बेटा क्या इस संदूव़ळ में बंद है ?

पड़ोसी : मैं अभी खोलता हूं।

बाप : नहीं, संदूव़ळ बंद रहने दो नहीं तो वो तुम्हें भी पकड़ लेंगे।

पड़ोसी : उन्होंने तुम्हारे बेटे का ख़ून कर दिया और तुम चाहते हो कि उनवेळ काले कारनामे छुपे रहें? मैं खोल वेळ देखना चाहता हूं कि उन्होंने बेंजामिन का क्या हाल किया है।

बाप : मेरा एक और जवान बेटा है जो अभी ज़िंदा है। मैं उसे ज़िंदा ही देखना चाहता हूं। संदूव़ळ बंद ही रहने दो।

पड़ोसी : बेंजामिन मेरा पड़ोसी था, मेरे बचपन का दोस्त था। मैं उसे आख़िरी बार देखना चाहता हूं।

औरत : बेंजामिन तुम्हारा पड़ोसी था, तुम्हारा दोस्त था, लेकिन मेरा वो पति था, मेरे बच्चे का बाप था। मैं कह रही हूं कि संदूव़ळ बंद रहने दो। क्योंकि मेरा एक भाई अभी ज़िंदा है, मैं नहीं चाहती कि उसका भी यही हश्र हो।

*[तीनों संदूव़ळ लेकर जाते हैं। नात्सी सैनिक 'हिटलर-हिटलर' दोहराते हैं। एक ओर खड़े हो जाते हैं। पात्र-१ हिटलर का मुखौटा लगाए आता है।]*

हिटलर : पूरा जर्मन राष्ट्र अब मेरे फ़ळौलादी शिकंजे में है। कड़े अनुशासन वेळ ज़रिए मैंने बदअमनी पैळलाने वालों का सफ़ळाया कर दिया है। अब मैं सारी दुनिया को फ़ळतह करूंगा। मेरे लड़ावूळ विमानों, बमवर्षकों, टैंकों और बंदूव़ळों वेळ सामने दुनिया की कोई ताव़ळत नहीं टिक पाएगी। मुझे यु( चाहिए, यु(। जब तक पूरी मानव जाति को ग़ुलाम न बना लूं, मैं चैन की सांस नहीं लूंगा।

*[दायरे वेळ छोर पर एक-एक कर बाव़ळी अभिनेता खड़े होते हैं।]*

पात्र-२ : इसवेळ बाद शुरू हुआ

पात्र-६ : मानव इतिहास का सबसे विनाशकारी, दूसरा महायु(

पात्र-८ : एक वेळ बाद एक यूरोप वेळ अनेक देश

पात्र-४ : हिटलर की सेनाओं वेळ सामने घुटने टेकते गए।

हिटलर : पोलैंड!

*[सैनिक गोली चलाते हैं। एक पात्र गिरता है।]*

हिटलर : ऑस्ट्रिया!

*[सैनिक गोली चलाते हैं। दूसरा पात्र गिरता है।]*

हिटलर : चेकोस्लोवाकिया!

*[सैनिक गोली चलाते हैं। तीसरा पात्र गिरता है।]*

हिटलर : फ़्रांस!

*[सैनिक गोली चलाते हैं। चौथा पात्र गिरता है। सैनिक जाते हैं।]*

हिटलर : अब पूरा यूरोप मेरे व़ळब्ज़े में है। मुझे कोई नहीं रोक सकता। मेरा विश्व साम्राज्य का सपना सच होकर रहेगा।

*[सातों पात्र लाल झंडे लिए एक ओर रचना बनाते हैं।]*

कोरस : इसवेळ बाद हिटलर की गि( दृष्टि पड़ी मज़दूरों वेळ देश रूस की तरफ़ळ।

*[सातों पात्रों की रचना की तरफ़ळ इशारा करता है।]*

हिटलर : मेरे सबसे बड़े दुश्मन हैं कम्युनिस्ट। जब तक मैं उनवेळ देश रूस को नहीं मसल डालता, मेरी जीत अधूरी रहेगी।

*[दो बार रूस पर हमला करवेळ परास्त होता है।]*

चार : ६ साल वेळ भीषण यु( वेळ बाद आई

कोरस : पहली मई, सन् १९४५

पात्र-२ : हिटलर की राजधानी बर्लिन पर लहराया

कोरस : मज़दूरों वेळ ख़ून से भीगा लाल झंडा

पात्र-६ : इंव़ळलाब

कोरस : ज़िंदाबाद

पात्र-८ : दुनिया वेळ मज़दूरो

कोरस : एक हो

पात्र-७ : मज़दूरों ने लाल झंडा उठाए इंसानियत की इस हैवानी ताव़ळत से निजात दिलाई।

*[हिटलर को बाहर पेळंकते हैं।]*

पात्र-८ : इसवेळ बाद दुनियाभर वेळ इंसानों की एक ही तमन्ना थी।

*[सभी पात्र बोलते हुए दायरे वेळ बाहर जाते हैं।]*

कोरस : हमें शांति चाहिए। *;सफ़ेळद झंडे उठाते हैंद्ध*

पात्र-६ : विश्व शांति ज़िंदाबाद।

कोरस : ज़िंदाबाद! ज़िंदाबाद!!

*[बोलते हुए बाहर जाते हैं।]*

पात्र-७ : उस बात को आज चालीस साल बीत गए हैं
आज फिर दुनिया पर जंग वेळ बादल छाए हैं

*[पात्र-१ रीगन का मुखौटा लगाए हथियारों से लैस वेशभूषा में आता है।]*

रीगन : मैं हूं रीगन मेरे नाम से दुनिया है थर्राती
मेरे एक इशारे पर ही फ़ळौज दौड़ती जाती
मेरे नाम का डंका आधी दुनिया में बजता है
आधी दुनिया मेरी ही सरगम पे तराने गाती
अमरीका ज़िंदाबाद, अमरीका ज़िंदाबाद
मुझे यु( चाहिए यु(, दुनिया वेळ हर कोने में मुझे यु( चाहिए,
अपने हथियार बेचने वेळ लिए मुझे यु( चाहिए, अपना बाज़ार पैळलाने वेळ लिए मुझे यु( चाहिए, समाजवाद को वुळचलने वेळ लिए मुझे यु( चाहिए, मुझे आकाश में यु( चाहिए, मुझे पाताल में यु( चाहिए, यु( यु( यु( यु(!

*[रीगन जाता है। बाव़ळी पात्र आते हैं।]*

कोरस : यु(, यु(, यु(, यु( !

पात्र-२ : आज दुनिया वेळ लिए सबसे बड़ा ख़तरा है यु(।

कोरस : यु(, यु(, यु(, यु(।

पात्र-४ : दुनियाभर वेळ मज़दूरों वेळ लिए सबसे बड़ी चुनौती है यु (।

कोरस : यु(, यु(, यु(, यु(।

पात्र-६ : अगर तीसरा महायु( छिड़ गया तो ये दुनिया राख का ढेर बनवेळ रह जाएगी। कोई भी प्राणी ज़िंदा नहीं बचेगा।

*[एक-एक करवेळ सभी पात्र चीख़ते चिल्लाते ज़मीन पर विवृळत मुद्रा में ढेर हो जाते हैं। वुळछ देर बाद पात्र-३ उठता है। ख़ामोशी से दायरे का चक्कर लगाता है।]*

पात्र-३ : अमरीकन साम्राज्यवाद दुनिया को ऐसे ही यु( की तरफ़ळ ले जा रहा है।

*[सभी पात्र खड़े होते हैं।]*

पात्र-१ : दुनिया पर जब भी कोई ख़तरा आया है

कोरस : मज़दूर वर्ग ने उससे टक्कर ली है, उसे हराया है

पात्र-४ : जंगख़ोर साम्राज्यवाद को हरा सकने वाली भी एक ही ताक़ळत है

कोरस : मज़दूर वर्ग की एकता

पात्र-६ : दुनिया वेळ मज़दूरो

कोरस : एक हो

*[लाल झंडा उठाए सभी पात्र गाते हैं।]*

अमन वेळ हम रखवाले, सब एक हैं, एक हैं
हम जुल्म से लड़ने वाले, सब एक हैं, एक हैं।

o